॥ श्रीहरिः ॥
दत्तात्रेय वज्रकवच
(हिन्दी अनुवाद-सहित)
495
गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

दत्तात्रेय वज्रकवच
(हिन्दी अनुवाद-सहित)

गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीदत्तात्रेयवज्रकवचम्

श्रीगणेशाय नमः । श्रीदत्तात्रेयाय नमः ॥

भगवान् श्रीगणेशजीको नमस्कार । भगवान् श्रीदत्तात्रेयजीको नमस्कार ।

ऋषय ऊचुः

कथं संकल्पसिद्धिः स्याद्वेदव्यास कलौ युगे ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं किमुदाहृतम् ॥ १ ॥

ऋषियोंने पूछा—व्यासजी महाराज ! आप कृपाकर यह बतलायें कि कलियुगमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि किस प्रकारसे होगी तथा क्लेश, मुक्ति और अन्य सत्संकल्प आदि कार्य कैसे सिद्ध होंगे ॥ १ ॥

व्यास उवाच

शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे शीघ्रं संकल्पसाधनम् ।
सकृदुच्चारमात्रेण भोगमोक्षप्रदायकम् ॥ २ ॥

भगवान् व्यास बोले—ऋषिगण ! आप सभी लोग सुनें। मैं (विधिपूर्वक) एक बारके पाठमात्रसे भोग और मोक्ष आदि सभीको तत्काल सिद्ध करनेवाला एक स्तोत्र बतलाता हूँ ॥ २ ॥

गौरीशृङ्गे हिमवतः कल्पवृक्षोपशोभितम् ।
दीप्ते दिव्यमहारत्नहेममण्डपमध्यगम् ॥ ३ ॥
रत्नसिंहासनासीनं प्रसन्नं परमेश्वरम् ।
मंदस्मितमुखाम्भोजं शंकरं प्राह पार्वती ॥ ४ ॥

हिमालय पर्वतके ऊपर एक गौरीशिखर नामका दिव्य शृङ्ग है, वह अनेक कल्पवृक्षोंसे सुशोभित रहता है, साथ ही महान् रत्नोंसे सदा उद्‌भाषित होता रहता है। वहीं भगवान् शिव और पार्वतीके निवासके लिये एक सुवर्णमय मण्डप बना हुआ है। वहीं रत्नसिंहासनपर प्रसन्न मनसे बैठे हुए मन्दस्मित मुखकमल भगवान् शंकरसे भगवती पार्वतीने आदरपूर्वक इस प्रकार पूछा॥ ३-४ ॥

श्रीदेव्युवाच

देवदेव महादेव लोकशंकर शंकर।
मन्त्रजालानि सर्वाणि यन्त्रजालानि कृत्स्नशः॥ ५॥
तन्त्रजालान्यनेकानि मया त्वत्तः श्रुतानि वै।
इदानीं द्रष्टुमिच्छामि विशेषेण महीतलम्॥ ६॥

देवी पार्वती बोलीं—हे देवाधिदेव महादेव! समस्त लोकोंके कल्याण करनेवाले भगवान् शंकर! आपसे मैंने अनेक प्रकारके मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र समुदायोंको भलीभाँति सुना, अब मेरी इस भूमण्डलपर विचरण करने और उनके दृश्योंको देखनेकी विशेष इच्छा हो रही है॥ ५-६ ॥

इत्युदीरितमाकर्ण्य पार्वत्या परमेश्वरः।
करेणामृज्य संतोषात्पार्वतीं प्रत्यभाषत॥ ७॥
मयेदानीं त्वया सार्धं वृषमारुह्य गम्यते।
इत्युक्त्वा वृषमारुह्य पार्वत्या सह शंकरः॥ ८॥
ययौ भूमण्डलं द्रष्टुं गौर्याश्चित्राणि दर्शयन्।

पार्वतीजीके इस कथनको सुनकर भगवान् शंकरने उनके हाथको प्रसन्नतापूर्वक स्पर्शकर इस प्रस्तावका अनुमोदन करते

हुए कहा कि ठीक है 'मैं ऐसा ही करता हूँ।' मैं तुम्हारे साथ अपने वृषभ वाहनपर बैठकर भूमण्डलके दृश्योंके अवलोकनके लिये चल रहा हूँ। ऐसा कहकर भगवान् शंकर पार्वतीके साथ अपने वृषभ वाहनपर बैठकर उन्हें विभिन्न क्षेत्रोंकी शोभा दिखाते हुए भूमण्डलके दृश्योंको देखनेके लिये निकल पड़े ॥ ७-८½ ॥

क्वचिद् विंध्याचलप्रान्ते महारण्ये सुदुर्गमे ॥ ९ ॥
तत्र व्याहन्तुमायान्तं भिल्लं परशुधारिणम् ।
वध्यमानं महाव्याघ्रं नखदंष्ट्राभिरावृतम् ॥ १० ॥
अतीव चित्रचारित्र्यं वज्रकायसमायुतम् ।
अप्रयत्नमनायासमखिन्नं सुखमास्थितम् ॥ ११ ॥

घूमते-घूमते वे लोग विन्ध्याचल पर्वतके अत्यन्त दुर्गम वनके एक भागमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने फरसा लिये हुए एक भिल्लको देखा, जो शिकारके लिये उस वनमें घूम रहा था। उसका शरीर वज्रके समान कठोर था, वह विशाल नख एवं दाढ़वाले एक बाघको मारनेमें प्रवृत्त था। उसका चरित्र अत्यन्त विचित्र था और उसके शरीरमें लेशमात्र भी श्रम एवं क्लान्तिके लक्षण नहीं दीख रहे थे तथा आनन्दपूर्वक निश्चिन्त खड़ा था ॥ ९—११ ॥

पलायन्तं मृगं पश्चाद् व्याघ्रो भीत्या पलायितः ।
एतदाश्चर्यमालोक्य पार्वती प्राह शंकरम् ॥ १२ ॥

बाघ मृगको देखकर डरकर भागने लगा* और उसके

---

* यहाँ मृगके खदेड़नेसे बाघके भागनेकी बात आश्चर्यपूर्ण है। इसीको लक्ष्यकर पार्वतीजीने भगवान् शंकरसे पूछा कि 'यह देखिये कैसा आश्चर्य है।' लेकिन भगवान् शंकरने कुछ उत्तर नहीं दिया, क्योंकि यह दलादनमुनिका आश्रम था। अहिंसाके प्रभावसे—खग मृग सहज बैर बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥और

पीछे-पीछे हिरन भी खदेड़ता हुआ जा रहा था। इस आश्चर्यको देखकर भगवती पार्वतीने भगवान् शंकरसे कहा॥ १२॥

श्रीपार्वत्युवाच

किमाश्चर्यं किमाश्चर्यमग्रे शम्भो निरीक्ष्यताम्।
इत्युक्तः स ततः शम्भुर्दृष्ट्वा प्राह पुराणवित्॥ १३॥

पार्वतीजी बोलीं—'प्रभो! यह सामने देखिये कितने बड़े आश्चर्यकी बात है।' यह सुनकर सभी रहस्योंके मर्मज्ञ भगवान् शंकरने उधर देखा और फिर वे कहने लगे॥ १३॥

श्रीशंकर उवाच

गौरि वक्ष्यामि ते चित्रमवाङ्मनसगोचरम्।
अदृष्टपूर्वमस्माभिर्नास्ति किञ्चिन्न कुत्रचित्॥ १४॥
मया सम्यक् समासेन वक्ष्यते शृणु पार्वति।

भगवान् शंकर बोले—हे पार्वति! इस विचित्र घटनाका रहस्य जो मेरी समझमें आया है, वह मैं तुमसे बतला रहा हूँ। वैसे तो हमलोगोंके लिये कहीं भी कोई भी वस्तु नयी नहीं है, सब कुछ देखा-सुना हुआ है। फिर भी मैं संक्षेपमें बतला रहा हूँ, तुम ध्यान देकर सुनो॥ १४ १/२॥

अयं दूरश्रवा नाम भिल्लः परमधार्मिकः॥ १५॥
समित्कुशप्रसूनानि कन्दमूलफलादिकम्।
प्रत्यहं विपिनं गत्वा समादाय प्रयासतः॥ १६॥

'चरहिं एक सँग गज पंचानन' की स्थिति यहाँ चरितार्थ हुई दीखती है। अर्थात् बाघ भी प्रीति या प्रेमके कारण भागने लगा। इसलिये पाठकोंको संदेह नहीं करना चाहिये और इसीलिये भगवान् शंकरने उत्तर नहीं दिया।

प्रिये पूर्वं मुनीन्द्रेभ्यः प्रयच्छति न वाञ्छति ।
तेऽपि तस्मिन्नपि दयां कुर्वते सर्वमौनिनः ॥ १७ ॥

यह दूरश्रवा नामका अत्यन्त धर्मात्मा भिल्ल है। प्रिये ! यह प्रतिदिन प्रयत्नपूर्वक वनसे समिधा, पुष्प, कुश, कन्द-मूल-फल आदि लेकर बिना कुछ पारिश्रमिक प्राप्त किये ही मुनियोंके आश्रमोंपर पहुँचा देता है। वह उनसे कुछ भी लेनेकी इच्छा भी नहीं करता, पर मुनिलोग उसपर बहुत कृपा करते हैं॥ १५—१७ ॥

दलादनो महायोगी वसन्नेव निजाश्रमे ।
कदाचिदस्मरत् सिद्धं दत्तात्रेयं दिगम्बरम् ॥ १८ ॥
दत्तात्रेयः स्मर्तृगामी चेतिहासं परीक्षितुम् ।
तत्क्षणात्सोऽपि योगीन्द्रो दत्तात्रेयः समुत्थितः ॥ १९ ॥

यहीं दलादन (पत्तोंके आहारपर जीवन धारण करनेवाले पर्णाद) मुनि भी अपने आश्रममें निवास करते हैं। एक बार उन्होंने दत्तात्रेयमुनिकी स्मर्तृगामिताकी[1] परीक्षाके लिये उनका स्मरण किया। फिर क्या था, महर्षि दत्तात्रेय तत्क्षण वहीं प्रकट हो गये॥ १८-१९ ॥

तं दृष्ट्वाऽऽश्चर्यतोषाभ्यां दलादनमहामुनिः ।
सम्पूज्याग्रे निषीदन्तं दत्तात्रेयमुवाच तम् ॥ २० ॥
मयोपहूतः सम्प्राप्तो दत्तात्रेय महामुने ।
स्मर्तृगामी त्वमित्येतत् किंवदन्ती परीक्षितुम् ॥ २१ ॥

उन्हें उपस्थित देखकर दलादनमुनिको महान् आश्चर्य और अपार हर्ष हुआ। उन्होंने बड़ी आवभगतपूर्वक आसनपर बैठाकर

१-जो स्मरण करते ही पहुँच जाय, उसे स्मर्तृगामी कहते हैं।

उनका स्वागत-सत्कार एवं पूजनकर उनसे कहा—'महामुने दत्तात्रेय ! मैंने तो केवल आपकी स्मर्तृगामिताकी प्रसिद्धि परीक्षाकी दृष्टिसे सामान्यरूपसे ही आपको स्मरण किया था ॥ २०-२१ ॥

मयाद्य संस्मृतोऽसि त्वमपराधं क्षमस्व मे ।
दत्तात्रेयो मुनिं प्राह मम प्रकृतिरीदृशी ॥ २२ ॥
अभक्त्या वा सुभक्त्या वा यः स्मरेन्मामनन्यधीः ।
तदानीं तमुपागत्य ददामि तदभीप्सितम् ॥ २३ ॥
दत्तात्रेयो मुनिं प्राह दलादनमुनीश्वरम् ।
यदिष्टं तद्वृणीष्व त्वं यत् प्राप्तोऽहं त्वया स्मृतः ॥ २४ ॥

आज जो मैंने आपको स्मरण किया और आप तत्काल यहाँ पधार गये, यह मैंने बड़ा भारी अपराध किया, आप मेरे इस अपराधको क्षमा करें।' इसपर दत्तात्रेयजीने दलादनमुनिसे कहा कि 'मेरा तो यह स्वभाव ही है कि कोई मुझे भाव-कुभाव, भक्ति या अभक्तिसे तल्लीनतापूर्वक स्मरण करे तो मैं तत्क्षण उसके पास पहुँच जाता हूँ और उसकी अभीष्ट वस्तु उसे प्रदान कर देता हूँ[१] । पुनः दत्तात्रेयजीने कहा—'अतः जब आपने मुझे स्मरण किया

१-इसमें कोई आश्चर्य नहीं समझना चाहिये । दत्तात्रेयजी भगवान् विष्णुके अवतार हैं । 'विष्लृ-व्याप्तौ' इस धातुसे 'नुक्' प्रत्यय करनेपर विष्णु शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है—सर्वव्यापक परमात्मा । इसलिये 'यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।' गीता (८ । २२) के इस वचनके अनुसार तो परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है । याद करनेसे व्यक्तिका परमात्मासे सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और क्रमशः वह विशुद्ध ज्ञान प्राप्त कर परमात्माको पूर्णरूपसे प्राप्त कर लेता है । गोस्वामी तुलसीदासजीके 'निर्मल मन जन सो मोहि पावा ।' तथा 'मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥' 'हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ।' आदि कथनोंका भी यही तात्पर्य है ।

है और मैं आ गया हूँ तो अब जो चाहो मुझसे माँग लो, मैं तुम्हें वह वस्तु प्रदान कर दूँगा' ॥ २२—२४ ॥

दत्तात्रेयं मुनिः प्राह मया किमपि नोच्यते ।
त्वच्चित्ते यत्स्थितं तन्मे प्रयच्छ मुनिपुङ्गव ॥ २५ ॥

इसपर दलादनमुनि बोले—हे मुनिपुङ्गव ! मेरी तो कोई माँग नहीं है, पर आपके मनमें मेरे कल्याणके लिये जो कुछ अच्छी वस्तु देनेकी इच्छा हो उसे दे सकते हैं ॥ २५ ॥

श्रीदत्तात्रेय उवाच

ममास्ति वज्रकवचं गृहाणेत्यवदन्मुनिम् ।
तथेत्यङ्गीकृतवते दलादमुनये मुनिः ॥ २६ ॥
स्ववज्रकवचं प्राह ऋषिच्छन्दः पुरःसरम् ।
न्यासं ध्यानं फलं तत्र प्रयोजनमशेषतः ॥ २७ ॥

दत्तात्रेयजी बोले—तब तुम मेरा यह वज्रकवच ही ग्रहण कर लो। इसपर दलादनमुनिके 'ऐसा ही हो' यह कहनेपर उन्होंने अपने वज्रकवचका उपदेश कर दिया और साथ-ही-साथ इसके ऋषि, छन्द, न्यास, ध्यान, फल और प्रयोजनका भी उपदेश कर दिया ॥ २६-२७ ॥

विनियोग इस प्रकार है—

अस्य श्रीदत्तात्रेयवज्रकवचस्तोत्रमन्त्रस्य किरातरूपी महारुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, द्रां बीजम्, आं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, ॐ आत्मने नमः । ॐ द्रीं मनसे नमः । ॐ आं द्रीं श्रीं सौः ॐ क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः । श्रीदत्तात्रेयप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

(करन्यास—) **ॐ द्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ द्रीं**

तर्जनीभ्यां नमः। ॐ द्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ द्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ द्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ द्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास भी इसी प्रकार कर लेना चाहिये।

'ॐ भूर्भुवः स्वरोम्' ऐसा कहकर (चुटकी बजाते हुए भूत-प्रेतोंसे अपने स्थान तथा शरीरकी रक्षाके लिये) दिग्बन्ध करना चाहिये।

अथ ध्यानम्

जगदङ्कुरकन्दाय सच्चिदानन्दमूर्तये।
दत्तात्रेयाय योगीन्द्रचन्द्राय परमात्मने॥ १॥

उनका ध्यान इस प्रकार है—संसार-वृक्षके मूलस्वरूप, सच्चिदानन्दकी मूर्ति और योगीन्द्रोंके लिये आह्लादकारी चन्द्रमा एवं परमात्मस्वरूप दत्तात्रेयमुनिको नमस्कार है॥ १॥

कदा योगी कदा भोगी कदा नग्नः पिशाचवत्।
दत्तात्रेयो हरिः साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रदायकः॥ २॥

कभी योगी-वेशमें, कभी भोगी-वेशमें और कभी नग्न दिगम्बरके वेशमें पिशाचके समान इधर-उधर घूमते महामुनि दत्तात्रेय भोग एवं मोक्षको देनेमें समर्थ साक्षात् विष्णु ही हैं॥ २॥

वाराणसीपुरस्नायी कोल्हापुरजपादरः।
माहुरीपुरभिक्षाशी सह्यशायी दिगम्बरः॥ ३॥

ये महामुनि प्रतिदिन प्रातः काशीमें गङ्गा नदीमें स्नान करते हैं और फिर समुद्रतटवर्ती कोल्हापुरके महालक्ष्मी-मन्दिरमें पहुँचकर

देवीका जप-ध्यान करते हैं तथा माहुरीपुर[१] पहुँचकर कुछ भिक्षा करते हैं और फिर सह्याचलकी कन्दराओंमें दिगम्बर-वेशमें विश्राम एवं शयन करते हैं ॥ ३ ॥

इन्द्रनीलसमाकारश्चन्द्रकान्तसमद्युतिः ।
वैदूर्यसदृशस्फूर्तिश्चलत्किञ्चिज्जटाधरः ॥ ४ ॥

देखनेमें इन्द्रनीलमणिके समान भस्म पोते हुए उनका शरीर पूरा नीला है और उनकी चमक चन्द्रकान्तमणिके समान श्वेतवर्णकी है ! इनकी फहराती हुई काली-नीली जटा कुछ-कुछ वैदूर्यमणिके समान दीखती है ॥ ४ ॥

स्निग्धधावल्ययुक्ताक्षोऽत्यन्तनीलकनीनिकः ।
भ्रूवक्षः श्मश्रुनीलाङ्कः शशाङ्कसदृशाननः ॥ ५ ॥

इनकी आँखें स्नेहसे भरी हुई श्वेतवर्णकी हैं। इनकी आँखोंकी पुतलियाँ बिलकुल नीली हैं। इनका मुखमण्डल चन्द्रमाके समान और इनकी भौंहें तथा छातीतक लटकी दाढ़ी नीली है ॥ ५ ॥

हासनिर्जितनीहारः कण्ठनिर्जितकम्बुकः ।
मांसलांसो दीर्घबाहुः पाणिनिर्जितपल्लवः ॥ ६ ॥

इनकी हास्यछटा नीहारकी हिम-बिन्दुओंको तिरस्कृत करती है और कण्ठकी शोभा शंखको लज्जित करती है। सारा शरीर मांससे भरा कुछ उभरा-सा है तथा इनकी भुजाएँ लम्बी हैं और करकमल नवीन पत्तोंसे भी अधिक कोमल हैं ॥ ६ ॥

१-इसका वर्तमान नाम माहुरगढ़ है। यहाँ दत्तात्रेयजीके मन्दिर आदि कई चिह्न हैं। इन्हें जमदग्नि ऋषिका गुरु कहा गया है। विशेष जानकारीके लिये कल्याणका तीर्थाङ्क द्रष्टव्य है। काशीपुरी मणिकर्णिका घाटकी दत्तपादुका तो बहुत ही प्रसिद्ध है।

विशालपीनवक्षाश्च　　ताम्रपाणिर्दलोदरः ।
पृथुलश्रोणिललितो　　विशालजघनस्थलः ॥ ७ ॥

इनकी छाती चौड़ी और मांसल है तथा करतल पूरा लाल है। इनका कटिप्रदेश मांसल एवं ललित है तथा जघनस्थल विशाल है॥ ७॥

रम्भास्तम्भोपमानोरूर्जानुपूर्वैकजंघकः　　।
गूढगुल्फः　कूर्मपृष्ठो　लसत्पादोपरिस्थलः ॥ ८ ॥

इनकी जाँघें केलेके स्तम्भके समान घुटनेतक उतरती हुई हैं तथा उनकी घुट्टियाँ मांससे ढकी हुई हैं और पैरका ऊपरी भाग कछुएकी पीठके समान ऊपर उठा हुआ है॥ ८॥

रक्तारविन्दसदृशरमणीयपदाधरः　　।
चर्माम्बरधरो योगी स्मर्तृगामी क्षणे क्षणे ॥ ९ ॥

इनका पदतल रक्तकमलके समान अत्यन्त मृदुल और रमणीय है। वे ऊपरसे अपने शरीरपर मृगचर्म धारण किये रहते हैं और जो भी भक्त इन्हें जब-जब जहाँ-जहाँ पुकारते हैं, वे अपने योगबलसे तब-तब वहाँ पहुँचते हैं॥ ९॥

ज्ञानोपदेशनिरतो　　विपद्धरणदीक्षितः ।
सिद्धासनसमासीन ऋजुकायो हसन्मुखः ॥ १० ॥

वे ज्ञानके उपदेशमें निरन्तर निरत रहते हैं और दूसरोंको क्लेशसे मुक्त करनेके लिये सदा बद्धपरिकर रहते हैं। वे प्रायः सीधे शरीरसे सिद्धासन लगाकर बैठे रहते हैं और उनके मुखपर मुस्कान सदा विराजमान रहती है॥ १०॥

वामहस्तेन　वरदो　दक्षिणेनाभयंकरः ।
बालोन्मत्तपिशाचीभिः क्वचिद्युक्तः परीक्षितः ॥ ११ ॥

उनके बाँयें हाथसे वरद मुद्रा और दाहिने हाथसे अभय मुद्रा प्रदर्शित होती है। वे कभी-कभी बालकों, उन्मत्त व्यक्तियों और पिशाचिनियोंसे घिरे हुए दीखते हैं॥ ११॥

त्यागी भोगी महायोगी नित्यानन्दो निरञ्जनः।
सर्वरूपी सर्वदाता सर्वगः सर्वकामदः॥ १२॥

वे एक ही साथ त्यागी, भोगी, महायोगी और मायामुक्त नित्य आनन्दस्वरूप विशुद्ध ज्ञानी हैं। वे एक ही साथ सब रूप धारण कर सकते हैं, सब जगह जा सकते हैं और सभीको सभी अभिलषित पदार्थ प्रदान करनेमें भी समर्थ हैं॥ १२॥

भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गो महापातकनाशनः।
भुक्तिप्रदो मुक्तिदाता जीवन्मुक्तो न संशयः॥ १३॥

महर्षि दत्तात्रेय अपने सारे शरीरमें भस्म लपेटे रहते हैं। इनके दर्शन या स्मरणसे सब पापोंका नाश हो जाता है। ये भोग एवं मोक्ष सब कुछ देनेमें समर्थ हैं और इसमें भी कोई संदेह नहीं कि ये पूर्ण जीवन्मुक्त[१] हैं॥ १३॥

एवं ध्यात्वाऽनन्यचित्तो मद्वज्रकवचं पठेत्।
मामेव पश्यन्सर्वत्र स मया सह संचरेत्॥ १४॥

महर्षि दत्तात्रेय दलादनजीसे कहते हैं—जो इस प्रकार अनन्य भावसे सब जगह मुझे देखते और मेरा ध्यान करते हुए

१-जीवन्मुक्तके लक्षणों तथा जीवन्मुक्तिके साधनोंको जाननेके लिये स्वामी विद्यारण्यरचित 'जीवन्मुक्ति-विवेक' और 'योगवासिष्ठ' के जीवन्मुक्ति प्रकरणको ध्यानसे देखना चाहिये। दत्तात्रेयजीके नामसे एक 'जीवन्मुक्तिगीता' नामका स्वतन्त्र ग्रन्थ भी उपलब्ध है साथ ही इनकी 'अवधूतगीता' तथा 'दत्तात्रेयसंहिता' में भी जीवन्मुक्तिपर पर्याप्त विचार प्राप्त होता है।

****

मेरे इस वज्रकवचका पाठ करेगा, वह जीवन्मुक्त होकर सदा मेरे साथ विचरण करेगा ॥ १४ ॥

दिगम्बरं भस्मसुगन्धलेपनं चक्रं त्रिशूलं डमरुं गदायुधम् ।
पद्मासनं योगिमुनीन्द्रवन्दितं दत्तेति नामस्मरणेन नित्यम् ॥ १५ ॥

जो निर्वस्त्र, भस्म लपेटे, सुगन्धित द्रव्योंसे उपलिप्त, चक्र, त्रिशूल, डमरू और गदा—इन आयुधोंको क्रमशः अपने चार हाथोंमें धारण किये हैं, पद्मासन लगाकर बैठे हैं और योगी तथा श्रेष्ठ मुनिगण जिनकी वन्दना-प्रार्थना कर रहे हैं ऐसे दत्तमुनि नित्य नाम-जपमें तल्लीन रहते हैं (ऐसे स्वरूपवाले दत्तात्रेयमुनिका मैं ध्यान कर रहा हूँ) ॥ १५ ॥

(अथ पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, 'ॐ द्रां' इतिअष्टोत्तरशतं जपेत्)

(इसके बाद चन्दन, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य— इन पाँच उपचारोंसे पूजा करके दत्तात्रेयजीका मूलबीज-मन्त्र **'ॐ द्रां'** का १०८ बार जप करे।)

(तदनन्तर कवचका इस प्रकार पाठ करना चाहिये—)

ॐ दत्तात्रेयः शिरः पातु सहस्राब्जेषु संस्थितः ।
भालं पात्वानसूयेयश्चन्द्रमण्डलमध्यगः ॥ १ ॥

सहस्रदल कमल (शून्य चक्र) में स्थित दत्तात्रेयजी मेरे मस्तककी रक्षा करें। चन्द्रमण्डलमें स्थित रहनेवाले अनसूयाके पुत्र भगवान् दत्तात्रेय मेरे ललाटकी रक्षा करें ॥ १ ॥

कूर्चं मनोमयः पातु हं क्षं द्विदलपद्मभूः ।
ज्योतीरूपोऽक्षिणी पातु पातु शब्दात्मकः श्रुती ॥ २ ॥

द्विदल पद्म (आज्ञा चक्र) में स्थित मनस्वरूपी भगवान् दत्तात्रेय कूर्च (मेरी नासिकाके ऊपरी भाग) की रक्षा करें।

ज्योतिस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे नेत्रोंकी तथा शब्दात्मक दत्त मेरे दोनों कानोंकी रक्षा करें॥ २ ॥

नासिकां पातु गन्धात्मा मुखं पातु रसात्मकः ।
जिह्वां वेदात्मकः पातु दन्तोष्ठौ पातु धार्मिकः ॥ ३ ॥

गन्धात्मक दत्त मेरी नासिकाकी तथा रसरूपी भगवान् दत्त मेरे मुखकी रक्षा करें। वेदज्ञानस्वरूपी दत्त मेरी जिह्वाकी तथा धर्मात्मा दत्त मेरे ओष्ठ और दाँतोंकी रक्षा करें॥ ३ ॥

कपोलावत्रिभूः पातु पात्वशेषं ममात्मवित् ।
स्वरात्मा षोडशाराब्जस्थितः स्वात्माऽवताद्गलम् ॥ ४ ॥

अत्रिपुत्र दत्त मेरे कपोलोंकी तथा आत्मवेत्ता दत्तात्रेयजी मेरे समूचे शरीरकी रक्षा करें। स्वरस्वरूप षोडशदल कमल (विशुद्धिचक्र) में स्थित निजात्मस्वरूप भगवान् दत्तात्रेयजी मेरे गलेकी रक्षा करें॥ ४ ॥

स्कन्धौ चन्द्रानुजः पातु भुजौ पातु कृतादिभूः ।
जत्रुणी शत्रुजित् पातु पातु वक्षःस्थलं हरिः ॥ ५ ॥

चन्द्रमामुनिके छोटे भाई दत्तात्रेयजी मेरे दोनों कन्धोंकी तथा सतयुगके आदिमें उत्पन्न होनेवाले भगवान् दत्तात्रेय मेरी दोनों भुजाओंकी रक्षा करें। शत्रुओंके विजेता भगवान् दत्त मेरी पसलियोंकी तथा साक्षात् विष्णुस्वरूप दत्तात्रेयजी मेरे वक्षःस्थलकी रक्षा करें॥ ५ ॥

कादिठान्तद्वादशारपद्मगो मरुदात्मकः ।
योगीश्वरेश्वरः पातु हृदयं हृदयस्थितः ॥ ६ ॥

कसे ठतक द्वादशदल कमल (अनाहतचक्र) में स्थित योगीश्वरोंके भी ईश्वर तथा हृदयस्थ वायुरूपी भगवान् दत्तात्रेय मेरे हृदयकी रक्षा करें॥ ६ ॥

पार्श्वे हरिः पार्श्ववर्ती पातु पार्श्वस्थितः स्मृतः ।
हठयोगादियोगज्ञः कुक्षी पातु कृपानिधिः ॥ ७ ॥

स्मर्तृगामी पासमें रहनेवाले साक्षात् भगवान् दत्तात्रेय मेरे पार्श्वभागोंकी तथा हठयोग आदि सभी योग-विद्याओंके ज्ञाता कृपासिन्धु दत्तात्रेयजी मेरी कुक्षि (पेट) की रक्षा करें ॥ ७ ॥

डकारादिफकारान्तदशारसरसीरुहे ।
नाभिस्थले वर्तमानो नाभिं वह्न्यात्मकोऽवतु ॥ ८ ॥
वह्नितत्त्वमयो योगी रक्षतान्मणिपूरकम् ।
कटिं कटिस्थब्रह्माण्डवासुदेवात्मकोऽवतु ॥ ९ ॥

डकारसे लेकर फकारतक दशदल कमलयुक्त, अग्नितत्त्वमय नाभिस्थल मणिपूरचक्रमें स्थित अग्निस्वरूप योगी भगवान् दत्तात्रेय मणिपूरचक्रसहित मेरी नाभिकी रक्षा करें। जिनके कटिप्रदेशमें समस्त ब्रह्माण्ड स्थित हैं, वे वासुदेवस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे कटिप्रदेशकी रक्षा करें ॥ ८-९ ॥

बकारादिलकारान्तषट्पत्राम्बुजबोधकः ।
जलतत्त्वमयो योगी स्वाधिष्ठानं ममावतु ॥ १० ॥

बकारसे लेकर लकारतक षड्दल कमलमें स्थित जलतत्त्वरूपी योगी भगवान् दत्तात्रेयजी मेरे स्वाधिष्ठानचक्रकी रक्षा करें ॥ १० ॥

सिद्धासनसमासीन ऊरू सिद्धेश्वरोऽवतु ।
वादिसान्तचतुष्पत्रसरोरुहनिबोधकः ॥ ११ ॥
मूलाधारं महीरूपो रक्षताद्वीर्यनिग्रही ।
पृष्ठं च सर्वतः पातु जानुन्यस्तकराम्बुजः ॥ १२ ॥

सिद्धासन लगाकर बैठे हुए सिद्धोंके स्वामी भगवान्

दत्तात्रेयजी मेरी दोनों जाँघोंकी रक्षा करें। 'व' कारसे लेकर 'स' कारतक चतुर्दल कमलमें स्थित महीरूप अखण्ड नैष्ठिक ब्रह्मचारी भगवान् दत्तात्रेय मेरे मूलाधारचक्रकी रक्षा करें। घुटनेपर हस्तकमलको रखकर बैठे हुए भगवान् दत्तात्रेय मेरी पीठकी सभी ओरसे रक्षा करें॥ ११-१२॥

जङ्घे पात्ववधूतेन्द्रः पात्वंघ्री तीर्थपावनः।
सर्वाङ्गं पातु सर्वात्मा रोमाण्यवतु केशवः॥ १३॥

अवधूतोंके स्वामी भगवान् दत्तात्रेय मेरे पैरकी दोनों पिण्डलियों तथा (अपने पैरोंसे सम्पूर्ण) तीर्थोंको पवित्र करनेवाले भगवान् दत्तात्रेय मेरे पदतलोंकी रक्षा करें। सर्वात्मा भगवान् दत्तात्रेय मेरे सभी अङ्गोंकी तथा विचित्र केशोंवाले भगवान् दत्तात्रेय मेरे रोमसमूहोंकी रक्षा करें॥ १३॥

चर्म चर्माम्बरः पातु रक्तं भक्तिप्रियोऽवतु।
मांसं मांसकरः पातु मज्जां मज्जात्मकोऽवतु॥ १४॥

मृगचर्म धारण करनेवाले भगवान् दत्तात्रेय मेरी त्वचाकी तथा भक्तिप्रिय भगवान् दत्तात्रेय मेरे शरीरके रक्तकी रक्षा करें। मांस बढ़ानेवाले दत्तात्रेय मेरी मांसस्थलीकी तथा मज्जात्मा भगवान् दत्तात्रेय मेरी मज्जा धातुकी रक्षा करें॥ १४॥

अस्थीनि स्थिरधीः पायान्मेधां वेधाः प्रपालयेत्।
शुक्रं सुखकरः पातु चित्तं पातु दृढाकृतिः॥ १५॥

स्थिर बुद्धिवाले भगवान् दत्तात्रेय मेरी हड्डियोंकी तथा ब्रह्मस्वरूप दत्तात्रेयजी मेरी मेधा (धारणाशक्ति) की रक्षा करें। सुख देनेवाले भगवान् दत्तात्रेय मेरे शुक्र (तेज) की और दृढ़ वज्रशरीरवाले दत्तात्रेयजी मेरे चित्तकी रक्षा करें॥ १५॥

मनोबुद्धिमहंकारं हृषीकेशात्मकोऽवतु।
कर्मेन्द्रियाणि पात्वीशः पातु ज्ञानेन्द्रियाण्यजः॥ १६॥

इन्द्रियोंके स्वामीरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे मन, बुद्धि और अहंकारकी रक्षा करें। ईश्वरस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरी कर्मेन्द्रियोंकी और अजन्मा भगवान् दत्त मेरी ज्ञानेन्द्रियोंकी रक्षा करें॥ १६॥

बन्धून् बन्धूत्तमः पायाच्छत्रुभ्यः पातु शत्रुजित्।
गृहारामधनक्षेत्रपुत्रादीञ्छंकरोऽवतु॥ १७॥

बन्धुओंमें उत्तम भगवान् दत्त मेरे बन्धु-बान्धवोंकी और शत्रुविजेता भगवान् दत्तात्रेय मेरी शत्रुओंसे रक्षा करें। शंकरस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय हमारे घर, खेत तथा बाग-बगीचे, धन-सम्पत्तियों और मेरे पुत्र आदिकी रक्षा करें॥ १७॥

भार्यां प्रकृतिवित् पातु पश्वादीन्पातु शार्ङ्गभृत्।
प्राणान्पातु प्रधानज्ञो भक्ष्यादीन्पातु भास्करः॥ १८॥

प्रकृतितत्त्वके मर्मज्ञ भगवान् दत्तात्रेय मेरी पत्नीकी और शार्ङ्गधनुष धारण करनेवाले विष्णुस्वरूप भगवान् दत्तात्रेय मेरे पशु आदिकी रक्षा करें। प्रधान तत्त्वके रहस्यवेत्ता भगवान् दत्तात्रेय मेरे प्राणोंकी और सूर्यस्वरूपी भगवान् दत्तात्रेय मेरे भक्ष्य-भोज्य आदि पदार्थोंकी कुदृष्टि एवं विष आदिसे रक्षा करें॥ १८॥

सुखं चन्द्रात्मकः पातु दुःखात् पातु पुरान्तकः।
पशून्पशुपतिः पातु भूतिं भूतेश्वरी मम॥ १९॥

चन्द्ररूपी भगवान् दत्त मेरे सुखोंकी रक्षा करें तथा त्रिपुर दैत्यको मारनेवाले शिवस्वरूपी दत्तात्रेयजी मुझे सभी क्लेशोंसे बचायें। पशुपतिनाथरूपी दत्तात्रेयजी मेरे पशुओंकी और

भूतेश्वररूपी दत्त मेरे वैभवों— योगसिद्धियोंकी रक्षा करें ॥ १९ ॥

प्राच्यां विषहरः पातु पात्वाग्नेय्यां मखात्मकः ।
याम्यां धर्मात्मकः पातु नैर्ऋत्यां सर्ववैरिहृत् ॥ २० ॥

विषको दूर करनेवाले दत्तजी पूर्व दिशामें और यज्ञस्वरूपी भगवान् दत्तात्रेय अग्निकोणमें रक्षा करें। धर्मराजरूपी दत्त दक्षिण दिशामें और सभी वैरियोंको नष्ट करनेवाले भगवान् दत्तात्रेय नैर्ऋत्यकोणमें मेरी रक्षा करें ॥ २० ॥

वराहः पातु वारुण्यां वायव्यां प्राणदोऽवतु ।
कौबेर्यां धनदः पातु पात्वैशान्यां महागुरुः ॥ २१ ॥

भगवान् वराहरूपी दत्त पश्चिम दिशामें और सबोंको नासिका-मार्गसे वायुद्वारा प्राण-संचार करनेवाले भगवान् दत्त वायुकोणमें रक्षा करें। उत्तर दिशामें धनाध्यक्ष कुबेररूपी और ईशानकोणमें विश्वके महागुरु शिवस्वरूप भगवान् दत्तात्रेयजी रक्षा करें ॥ २१ ॥

ऊर्ध्वं पातु महासिद्धः पात्वधस्ताज्जटाधरः ।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वादिमुनीश्वरः ॥ २२ ॥

महासिद्धरूपी दत्तात्रेयजी ऊपरकी ओर और जटाधारी भगवान् दत्तात्रेयजी मेरी नीचेकी दिशामें रक्षा करें। जो रक्षाके लिये स्थान निर्दिष्ट नहीं किये गये हैं, शेष बच गये हैं, आदि मुनि दत्तात्रेयजी उसकी रक्षा करें ॥ २२ ॥

(मालामन्त्रजपः । हृदयादिन्यासः)

इसी प्रकार कवचके अन्तमें भी पूर्ववत् मालामन्त्रका जप, (करन्यास) हृदयादि अंगन्यास सम्पन्न कर लेना चाहिये।

एतन्मे वज्रकवचं यः पठेच्छृणुयादपि ।
वज्रकायश्चिरञ्जीवी दत्तात्रेयोऽहमब्रुवम् ॥ २३ ॥
त्यागी भोगी महायोगी सुखदुःखविवर्जितः ।
सर्वत्रसिद्धसंकल्पो जीवन्मुक्तोऽथ वर्तते ॥ २४ ॥

दत्तात्रेयजी कहते हैं कि जो मेरे इस वज्रकवचका पाठ एवं श्रवण भी करता है उसका सम्पूर्ण शरीर वज्रका हो जाता है और उसकी आयु भी अतिदीर्घ हो जाती है। यह मेरा स्वयंका कथन है। वह मेरे ही समान त्यागी, भोगी, महायोगी तथा सुख-दुःखोंसे परे हो जाता है, उसके सभी संकल्प सदा सर्वत्र सिद्ध होने लगते हैं और वह जीवन्मुक्त हो जाता है ॥ २३-२४ ॥

इत्युक्त्वान्तर्दधे योगी दत्तात्रेयो दिगम्बरः ।
दलादनोऽपि तज्जप्त्वा जीवन्मुक्तः स वर्तते ॥ २५ ॥

ऐसा कहकर अवधूत दत्तात्रेयजी तो अन्तर्धान हो गये और दलादनमुनि भी इसका जपकर उनके ही समान जीवन्मुक्तके रूपमें आज भी विद्यमान हैं ॥ २५ ॥

भिल्लो दूरश्रवा नाम तदानीं श्रुतवानिदम् ।
सकृच्छ्रवणमात्रेण वज्राङ्गोऽभवदप्यसौ ॥ २६ ॥

उसी समय दूरश्रवा नामके उस भिल्लने भी इस स्तोत्रको दूरसे ही सुन लिया था और एक ही बार सुननेसे उसका भी शरीर वज्रके समान सुदृढ़ हो गया ॥ २६ ॥

इत्येतद्वज्रकवचं दत्तात्रेयस्य योगिनः ।
श्रुत्वाशेषं शम्भुमुखात् पुनरप्याह पार्वती ॥ २७ ॥

इस प्रकार महायोगी दत्तात्रेयजीके वज्रकवचको भगवान् शंकरके मुखसे सुनकर पार्वतीजीने उनसे पुनः प्रश्न किया ॥ २७ ॥

पार्वत्युवाच

एतत्कवचमाहात्म्यं वद विस्तरतो मम।
कुत्र केन कदा जाप्यं किं यज्जाप्यं कथं कथम्॥ २८॥

पार्वतीजी बोलीं—भगवन्! आप कृपापूर्वक इस वज्रकवचका माहात्म्य मुझे विस्तारपूर्वक बताइये। इसके जपका कौन अधिकारी है और इसे कहाँ, किस प्रकार और कब-कैसे जपना चाहिये॥ २८॥

उवाच शम्भुस्तत्सर्वं पार्वत्या विनयोदितम्।

श्रीशिव उवाच

शृणु पार्वति वक्ष्यामि समाहितमनाविलम्॥ २९॥
धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेव परायणम्।
हस्त्यश्वरथपादातिसर्वैश्वर्यप्रदायकम्॥ ३०॥

पार्वतीजीके द्वारा विनीत भावसे पूछे जानेपर भगवान् शंकरने सब कुछ बतला दिया।

श्रीशिवजी बोले—पार्वती! तुमने जो पूछा है उसे मैं बतला रहा हूँ। तुम ध्यान देकर सब सुनो। एकमात्र यह स्तोत्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सबका सम्पादन करनेवाला है तथा हाथी, घोड़ा, रथ तथा पादचारी चतुरंगिणी सेना और सम्पूर्ण ऐश्वर्योंको प्रदान करनेवाला है॥ २९-३०॥

पुत्रमित्रकलत्रादिसर्वसन्तोषसाधनम्।
वेदशास्त्रादिविद्यानां निधानं परमं हि तत्॥ ३१॥
सङ्गीतशास्त्रसाहित्यसत्कवित्वविधायकम्।
बुद्धिविद्यास्मृतिप्रज्ञामतिप्रौढिप्रदायकम्॥ ३२॥

इसके पढ़नेसे पुत्र, मित्र, स्त्री आदि तथा सर्वोपरि तत्त्व भगवत्प्राप्तिरूप संतोष भी प्राप्त हो जाता है और यही वेदशास्त्र आदि सभी विद्याओं तथा ज्ञान-विज्ञानका आकर है। साथ-ही-साथ यह संगीतशास्त्र, अलंकार, काव्य और श्रेष्ठ कविताके निर्माणका ज्ञान भी प्राप्त करा देता है। बुद्धि, विद्या, धारणाशक्तिरूप स्मृति, नव नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाशक्ति तथा विशुद्ध बोधात्मिका बुद्धि आदिको भी यह प्रदान कर देता है ॥ ३१-३२ ॥

सर्वसन्तोषकरणं सर्वदुःखनिवारणम् ।
शत्रुसंहारकं शीघ्रं यशःकीर्तिविवर्धनम् ॥ ३३ ॥

यह सब प्रकारके क्लेशोंको नष्ट करनेवाला तथा सभी प्रकारसे सुख-संतोषोंको प्रदान करनेवाला है। इसका पाठ तत्काल सभी काम, क्रोध आदि आन्तरिक और बाह्य-शत्रुओंका संहारकर यश और कीर्तिका विस्तार करता है ॥ ३३ ॥

अष्टसंख्या महारोगाः सन्निपातास्त्रयोदश ।
षण्णवत्यक्षिरोगाश्च विंशतिर्मेहरोगकाः ॥ ३४ ॥
अष्टादश तु कुष्ठानि गुल्मान्यष्टविधान्यपि ।
अशीतिर्वातरोगाश्च चत्वारिंशत्तु पैत्तिकाः ॥ ३५ ॥
विंशति श्लेष्मरोगाश्च क्षयचातुर्थिकादयः ।
मन्त्रयन्त्रकुयोगाद्याः कल्पतन्त्रादिनिर्मिताः ॥ ३६ ॥

यह आठ प्रकारके महारोगों, तेरह प्रकारके सन्निपातों, छियानबे प्रकारके नेत्र-रोगों और बीस प्रकारके प्रमेह, अठारह प्रकारके कुष्ठ, आठ प्रकारके शूल-रोग, अस्सी प्रकारके वात-रोग, चालीस प्रकारके पित्तरोग, बीस प्रकारके कफ सम्बन्धी

रोग, साथ ही क्षयरोग,, चतुराहिक, तिजरा और बारी आदिसे आनेवाले ज्वर एवं मन्त्र-यन्त्र, कुयोग, टोटना आदिसे उत्पन्न रोग, दुःख, पीड़ा आदि भी नष्ट हो जाते हैं॥ ३४—३६॥

ब्रह्मराक्षसवेतालकूष्माण्डादिग्रहोद्भवाः ।
संगजादेशकालस्थास्तापत्रयसमुत्थिताः ॥ ३७ ॥

इसके अतिरिक्त भूत, प्रेत, ब्रह्मराक्षस, कूष्माण्ड आदिसे होनेवाले दैवी प्रकोप और दुष्ट ग्रहोंके द्वारा गोचरसे उत्पन्न अनेक प्रकारकी पीड़ाएँ स्पर्श दोषसे उत्पन्न होनेवाली छूआछूतकी बीमारियाँ और विभिन्न देश, कालसे उत्पन्न होनेवाली प्रतिश्याय (जुकाम आदि) शीत ज्वर (मलेरिया आदि) तथा तापत्रयों (आधिदैहिक, आधिदैविक और आधिभौतिक) का इससे शमन हो जाता है॥ ३७॥

नवग्रहसमुद्भूता महापातकसम्भवाः ।
सर्वे रोगाः प्रणश्यन्ति सहस्रावर्तनाद्‌ध्रुवम् ॥ ३८ ॥

इस कवचके सहस्रावर्तन— हजार बार पाठ करनेसे नवग्रहसे उत्पन्न, पूर्व जन्मके पातक-महापातकोंसे उत्पन्न सभी रोग, दुःख सर्वथा एवं निश्चितरूपसे नष्ट हो जाते हैं॥ ३८॥

अयुतावृत्तिमात्रेण वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।
अयुतद्वितयावृत्त्या ह्यपमृत्युजयो भवेत् ॥ ३९ ॥

इसके दस हजार बार पाठ करनेसे वन्ध्या स्त्रीको भी सुलक्षण पुत्र प्राप्त हो जाता है और इसके बीस हजार बार पाठ करनेसे अकाल मृत्यु भी दूर हो जाती है॥ ३९॥

अयुतत्रितयाश्चैव खेचरत्वं प्रजायते ।
सहस्रादयुतादर्वाक् सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ ४० ॥

लक्षावृत्त्या कार्यसिद्धिर्भवत्येव न संशयः ॥ ४१ ॥

इसके तीस हजार पाठ करनेसे साधक आकाशगमनकी शक्ति प्राप्त कर लेता है और हजारसे लेकर दस हजारतककी संख्यामें पाठ करते-न-करते सारी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। इसके एक लाख आवृत्तिसे निःसंदेह साधकके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं ॥ ४०-४१ ॥

विषवृक्षस्य मूलेषु तिष्ठन् वै दक्षिणामुखः ।
कुरुते मासमात्रेण वैरिणं विकलेन्द्रियम् ॥ ४२ ॥

गूलरके वृक्षके नीचे दक्षिणकी ओर मुखकर बैठकर इसका एक मासतक जप करनेसे शत्रुकी सभी इन्द्रियाँ सर्वथा विकल हो जाती हैं ॥ ४२ ॥

औदुम्बरतरोर्मूले वृद्धिकामेन जाप्यते ।
श्रीवृक्षमूले श्रीकामी तिंतिणी शान्तिकर्मणि ॥ ४३ ॥

गूलरके वृक्षके नीचे धन-धान्यकी वृद्धि करनेके लिये जप करनेका विधान है। लक्ष्मी-प्राप्तिकी कामनासे बिल्व-वृक्षके नीचे एवं किसी भी उपद्रवकी शान्तिके लिये इमली वृक्षके नीचे जप करना चाहिये ॥ ४३ ॥

ओजस्कामोऽश्वत्थमूले स्त्रीकामैः सहकारके ।
ज्ञानार्थी तुलसीमूले गर्भगेहे सुतार्थिभिः ॥ ४४ ॥

तेज, ओज और बलकी कामनासे पीपलके वृक्षके नीचे, विवाहकी इच्छासे नवीन आम्रवृक्षके नीचे तथा ज्ञानकी इच्छासे तुलसी वृक्षके नीचे एवं पुत्रकी इच्छावालोंको भगवान्के मन्दिरके गर्भगृहमें बैठकर इसका पाठ करना चाहिये ॥ ४४ ॥

धनार्थिभिस्तु सुक्षेत्रे पशुकामैस्तु गोष्ठके ।
देवालये सर्वकामैस्तत्काले सर्वदर्शितम् ॥ ४५ ॥

धनकी इच्छावालोंको किसी शुभ स्थानमें तथा पशुकी इच्छावालोंको गौशालेमें बैठकर पाठ करना चाहिये। देवालयमें किसी भी कामनासे बैठकर जप करनेसे उसकी तत्काल सिद्धि होती है ॥ ४५ ॥

नाभिमात्रजले स्थित्वा भानुमालोक्य यो जपेत्।
युद्धे वा शास्त्रवादे वा सहस्रेण जयो भवेत् ॥ ४६ ॥

नदी, सरोवर आदिमें नाभिपर्यन्त जलमें स्थित होकर भगवान् सूर्यको देखते हुए इस कवचका एक हजार बार जप करता है वह युद्ध, शास्त्रार्थ और सभी प्रकारके विवादोंमें विजयी होता है ॥ ४५ ॥

कण्ठमात्रे जले स्थित्वा यो रात्रौ कवचं पठेत्।
ज्वरापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् ॥ ४७ ॥

जो रात्रिमें किसी जलाशय आदिमें कण्ठमात्र जलमें स्थित होकर इस कवचका पाठ करता है, उसके सामान्य ज्वर, मिर्गी, कुष्ठ और ऊष्ण ज्वर आदि ताप भी नष्ट हो जाते हैं ॥ ४७ ॥

यत्र यत्स्यात्स्थिरं यद्यत्प्रसक्तं तन्निवर्तते।
तेन तत्र हि जप्तव्यं ततः सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ४८ ॥

जहाँ कहीं जो कुछ उपद्रव, महामारी, दुर्भिक्ष आदि बीमारियाँ स्थिर हो गयी हैं, वहाँ जाकर इस कवचके जपमात्रसे निश्चित ही वे उपद्रव आदि निर्वृत्त हो जाते हैं और शान्ति हो जाती है ॥ ४८ ॥

इत्युक्तवाञ्च शिवो गौर्यै रहस्यं परमं शुभम्।
यः पठेद् वज्रकवचं दत्तात्रेयसमो भवेत् ॥ ४९ ॥

(व्यासजी ऋषियोंसे कहते हैं कि) भगवान् शंकरने पार्वतीजीसे इस परम गुप्त और कल्याणकारी स्तोत्रको कहा था।

****

जो व्यक्ति इस वज्रकवचका पाठ करता है वह भी परम सिद्ध दत्तात्रेयजीके समान ही समस्त गुणोंसे सम्पन्न हो जाता है ॥ ४९ ॥

एवं शिवेन कथितं हिमवत्सुतायै
प्रोक्तं दलादमुनयेऽत्रिसुतेन पूर्वम् ।
यः कोऽपि वज्रकवचं पठतीह लोके
दत्तोपमश्चरति योगिवरश्चिरायुः ॥ ५० ॥

इस बातको पहले अत्रिपुत्र दत्तात्रेयजीने दलादनमुनिसे कहा था और उसे ही भगवान् शंकरने पर्वतराज हिमालयकी पुत्री भगवती पार्वतीजीको बतलाया । जो व्यक्ति इस वज्रकवचका पाठ करता है वह चिरायु एवं योगियोंमें श्रेष्ठ होकर दत्तात्रेय भगवान्की तरह सर्वत्र विचरण करता है ॥ ५० ॥

इति श्रीरुद्रयामले हिमवत्खण्डे मन्त्रशास्त्रे उमामहेश्वरसंवादे श्रीदत्तात्रेयवज्रकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

इस प्रकार रुद्रयामल-तन्त्रके अन्तर्गत मन्त्रशास्त्ररूप हिमवत्खण्डमें शिव-पार्वतीके संवादरूपमें श्रीदत्तात्रेयजीका वज्रकवच परिपूर्ण हुआ ।

———————

कर्पूरकान्तिदेहाय ब्रह्ममूर्तिधराय च ।
वेदशास्त्रपरिज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

कर्पूरकी कान्तिके समान गौर शरीरवाले, ब्रह्माजीकी मूर्तिको धारण करनेवाले और वेद-शास्त्रका पूर्ण ज्ञान रखनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है ॥ ३ ॥

ह्रस्वदीर्घकृशस्थूलनामगोत्रविवर्जित ।
पञ्चभूतैकदीप्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

कभी ठिगने, कभी लम्बे, कभी स्थूल और कभी दुबले-पतले शरीर धारण करनेवाले, नाम-गोत्रसे विवर्जित, केवल पञ्चमहाभूतोंसे युक्त दीप्तिमान् शरीर धारण करनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा प्रणाम है ॥ ४ ॥

यज्ञभोक्त्रे च यज्ञाय यज्ञरूपधराय च ।
यज्ञप्रियाय सिद्धाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

यज्ञके भोक्ता, यज्ञ-विग्रह और यज्ञ-स्वरूपको धारण करनेवाले, यज्ञसे प्रसन्न होनेवाले, सिद्धरूप आप दत्तात्रेयजीको मेरा प्रणाम है ॥ ५ ॥

आदौ ब्रह्मा मध्ये विष्णुरन्ते देवः सदाशिवः ।
मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

सर्वप्रथम ब्रह्मा-रूप, मध्यमें विष्णु-रूप और अन्तमें सदाशिव-स्वरूप—इन तीन स्वरूपोंको धारण करनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा प्रणाम है ॥ ६ ॥

भोगालयाय भोगाय योग्ययोग्याय धारिणे ।
जितेन्द्रिय जितज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

समस्त सुख-भोगोंके निधान-स्वरूप, सुखस्वरूप, सभी

योग्य व्यक्तियोंमें भी उत्कृष्ट योग्यतम रूप धारण करनेवाले, जितेन्द्रिय तथा जितेन्द्रियोंकी ही जानकारीमें आनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है ॥ ७ ॥

दिगम्बराय दिव्याय दिव्यरूपधराय च ।
सदोदितपरब्रह्म दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

सदा दिगम्बर-वेषधारी, दिव्यमूर्ति और दिव्य स्वरूप धारण करनेवाले, जिन्हें सदा ही परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार होता रहता है, ऐसे आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है ॥ ८ ॥

जम्बूद्वीपे महाक्षेत्रे मातापुरनिवासिने ।
जयमानः सतां देव दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥

जम्बूद्वीपके विशाल क्षेत्रके अन्तर्गत मातापुर नामक स्थानमें निवास करनेवाले, संतोंके बीचमें सदा प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा प्रणाम है ॥ ९ ॥

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेममयं करे ।
नानास्वादमयी भिक्षा दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥

हाथमें सुवर्णमय भिक्षापात्र लिये हुए, ग्राम-ग्राम और घर-घरमें भिक्षाटन करनेवाले तथा अनेक प्रकारके दिव्य स्वादयुक्त भिक्षा ग्रहण करनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा प्रणाम है ॥ १० ॥

ब्रह्मज्ञानमयी मुद्रा वस्त्रे चाकाशभूतले ।
प्रज्ञानघनबोधाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥

ब्रह्मज्ञानयुक्त ज्ञानमुद्राको धारण करनेवाले और आकाश तथा पृथिवीको ही वस्त्र-रूपमें धारण करनेवाले, अत्यन्त ठोस ज्ञानयुक्त बोधमय विग्रहवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है ॥ ११ ॥

अवधूत सदानन्द परब्रह्मस्वरूपिणे।
विदेहदेहरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते॥ १२॥

अवधूत-वेषमें सदा ब्रह्मानन्दमें निमग्न रहनेवाले तथा परब्रह्म परमात्माके ही स्वरूप, शरीर होनेपर भी शरीरसे ऊपर उठकर जीवन्मुक्तावस्थामें स्थित रहनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है॥ १२॥

सत्यरूप सदाचार सत्यधर्मपरायण।
सत्याश्रय परोक्षाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते॥ १३॥

साक्षात् सत्यके रूप, सदाचारके मूर्तिमान् स्वरूप और सत्य-भाषण एवं धर्माचरणमें लीन रहनेवाले, सत्यके आश्रय और परोक्षरूपमें परमात्मा तथा दिखायी न पड़नेपर भी सर्वत्र व्याप्त आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है॥ १३॥

शूलहस्त गदापाणे वनमालासुकन्धर।
यज्ञसूत्रधर ब्रह्मन् दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते॥ १४॥

हाथमें शूल तथा गदा धारण किये हुए, वनमालासे सुशोभित कंधोंवाले, यज्ञोपवीत धारण किये हुए ब्राह्मणस्वरूप आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है॥ १४॥

क्षराक्षरस्वरूपाय परात्परतराय च।
दत्तमुक्तिपरस्तोत्र दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते॥ १५॥

क्षर (नश्वर विश्व) तथा अक्षर (अविनाशी परमात्मा)—रूपमें सर्वत्र व्याप्त, परसे भी परे, स्तोत्र-पाठ करनेपर शीघ्र मोक्ष देनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है॥ १५॥

दत्तविद्याय लक्ष्मीश दत्तस्वात्मस्वरूपिणे।
गुणनिर्गुणरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते॥ १६॥

सभी विद्याओंको प्रदान करनेवाले, लक्ष्मीके भी स्वामी, प्रसन्न होकर आत्मस्वरूपको ही प्रदान करनेवाले, त्रिगुणात्मक एवं गुणोंसे अतीत निर्गुण अवस्थामें रहनेवाले आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है ॥ १६ ॥

शत्रुनाशकरं स्तोत्रं ज्ञानविज्ञानदायकम् ।
सर्वपापशमं याति दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥

यह स्तोत्र बाह्य तथा आभ्यन्तर (काम, क्रोध, मोहादि) सभी शत्रुओंको नष्ट करनेवाला, शास्त्रज्ञान तथा अनुभवजन्य अध्यात्मज्ञान—दोनोंको प्रदान करनेवाला है, इसका पाठ करनेसे सभी पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं। ऐसे इस स्तोत्रके आराध्य आप दत्तात्रेयजीको मेरा नमस्कार है ॥ १७ ॥

इदं स्तोत्रं महद्दिव्यं दत्तप्रत्यक्षकारकम् ।
दत्तात्रेयप्रसादाच्च नारदेन प्रकीर्तितम् ॥ १८ ॥

यह स्तोत्र बहुत दिव्य है। इसके पढ़नेसे दत्तात्रेयजीका साक्षात् दर्शन होता है। दत्तात्रेयजीके अनुग्रहसे ही शक्ति-सम्पन्न होकर नारदजीने इसकी रचना की है (यह इसकी विशेषता है) ॥ १८ ॥

इति श्रीनारदपुराणे नारदविरचितं
दत्तात्रेयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

इस प्रकार श्रीनारदपुराणमें निर्दिष्ट देवर्षि नारदजीद्वारारचित दत्तात्रेयस्तोत्र समाप्त हुआ।

═══ ★ ═══

ईश्वर, महात्मा, शास्त्र और परलोकमें विश्वास करनेवाले पुरुषसे कभी पाप नहीं बन सकते। उसमें धीरता, वीरता, गम्भीरता, निर्भयता, समता और शान्ति आदि अनेक गुण अनायास ही आ जाते हैं, जिससे उसके सारे आचरण स्वाभाविक ही उत्तम-से-उत्तम होने लगते हैं।

(सत्सङ्गकी कुछ सार बातें नामक पुस्तकसे)

थोड़ी देरका कुसंग भी मनुष्यके लिये बहुत हानिकारक हो हो जाता है—इस बातको ध्यानमें रखकर नास्तिक, नीच, प्रमादी, भोगी, पापी, निकम्मे, आलसी, दूसरोंपर निर्भर रहकर जीवन-निर्वाह करनेवाले, बहुमूल्य वस्त्राभूषण धारण करनेवाले, खेल-तमाशा और मादक वस्तुओंका सेवन करनेवाले दुर्व्यसनी स्त्री या पुरुषोंका कभी भूलकर क्षणमात्र भी संग नहीं करना चाहिये और प्रमाद, आलस्य, निद्रा, भय, उद्वेग, राग, द्वेष अहंकार और दुर्व्यसन आदिसे रहित होकर अपना जीवन विवेक, वैराग्य, त्याग और संयमपूर्वक निष्कामभावसे भजन-ध्यान, सत्संग-स्वाध्यायमें ही बिताना चाहिये तथा सम्पूर्ण प्राणिमात्रको परमात्माका स्वरूप समझकर, आसक्ति और अहंकारसे रहित होकर निष्कामभावपूर्वक तन-मनसे सबकी सेवा करनी चाहिये एवं सबपर समान भावसे हेतुरहित दया और प्रेम रखना चाहिये।

(महत्त्वपूर्ण-शिक्षा नामक पुस्तकसे)

वह सच्चिदानन्दघन परमात्मा सदा-सर्वदा सब जगह प्रत्यक्ष मौजूद हैं, किन्तु इस प्रकार प्रत्यक्ष होते हुए भी हमारे न माननेके कारण वह अप्राप्त है। सच्चिदानन्दघन परमात्माका कहीं कभी अभाव नहीं है। इस प्रकार न मानना ही अज्ञान है और इस अज्ञानको दूर करनेके लिये प्रयत्न करना ही परम पुरुषार्थ है। हमें इस अज्ञानको ही दूर करना है। इसके सिवा और किसी रूपमें हमें परमात्माकी प्राप्ति नहीं करनी है। परमात्मा तो नित्य प्राप्त ही है। उस प्राप्त हुए परमात्माकी ही प्राप्ति करनी है, अप्राप्तकी प्राप्ति नहीं करनी है। वह सच्चिदानन्दघन परमात्मा सदा-सदा-सर्वदा सबको प्राप्त है, यह दृढ़ निश्चय करना ही परमात्माको प्राप्त करना है। इस प्रकार निश्चय हो जानेपर परम शान्ति और परम पदकी प्राप्ति सदाके लिये प्रत्यक्ष हो जाती है। यदि न हो तो उसकी मान्यतामें कमी है।

(ज्ञानयोगका तत्त्व नामक पुस्तकसे)

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेसकी निजी दूकानें

		☎
१.	**गोविन्दभवन-कार्यालय**	
	१५१, महात्मागांधी रोड, कलकत्ता-७००००७	२३८६८९४
२.	**गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक दूकान,**	
	२६०९, नयी सड़क, दिल्ली-११०००६	३२६९६७८
३.	**गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक दूकान,**	
	अशोक राजपथ, पटना-८००००४	
४.	**गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक दूकान,**	
	२४/५५, बिरहाना रोड, कानपुर-२०८००१	३५२३५१
५.	**गीताप्रेस, पेपर एजेन्सी,**	
	५९। ९, नीचीबाग, वाराणसी-२२१००१	५७१५१
६.	**गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक दूकान,**	
	सब्जीमण्डी मोतीबाजार हरिद्वार-२४९४०१	
७.	**गीताभवन, गङ्गापार, स्वर्गाश्रम**-२४९३०४	३०१२२

गीताप्रेसकी स्टेशन स्टालें

१-दिल्ली जंक्शन, प्लेटफार्म नं० १; २-नयी दिल्ली, प्लेटफार्म नं० ८। ९; ३-अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा (दिल्ली); ४-निजामुद्दीन (नयी दिल्ली), प्लेटफार्म नं० ४-५; ५-कोटा (राजस्थान) प्लेटफार्म नं० १; ६-कानपुर, प्लेटफार्म नं० १; ७-गोरखपुर, प्लेटफार्म नं० १; ८-वाराणसी, प्लेटफार्म नं० ३; ९-हरिद्वार, प्लेटफार्म नं० १; १०-पटना, पुस्तक-ट्रॉली, प्लेटफार्म नं० १; ११-हावड़ा, प्लेटफार्म नं० १८के पास

अन्य अधिकृत पुस्तक-विक्रेता

श्रीगीताप्रेस, पुस्तक प्रचार केन्द्र, फोन : ५६३३७९
''बुलियन बिल्डिंग'', जौहरी बाजार, जयपुर—३०२००३